ISSN 2279-0489

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY HALF YEARLY RESEARCH JOURNAL

GENIUS

VOLUME - VI ISSUE - II FEBRUARY - JULY - 2018

Peer Reviewed Referred and UGC Listed Journal

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2017 -4.954
www.sjifactor.com

✦ EDITOR ✦

Assit. Prof. Vinay Shankarrao Hatole

M.Sc (Math's), M.B.A. (Mkt), M.B.A (H.R),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod & Dirt), M.Ed.

✦ PUBLISHED BY ✦

Ajanta Prakashan
Aarangabad. (M.S.)

५	**अरूणा रायचूरू**	हिमांशु जोशी के कथा साहित्य में पारिवारिक मूल्यबोध	१६-१८
६	**डॉ. ललिता राठोड**	महादेवी वर्मा के रेखाचित्र एवं व्यंकटेश माडगुलकर के व्यक्तिचित्र	१९-२१

'जिनिअस' या सहामयि प्रसिध्द झालेली मते मुख्य संपादक, संपादक मंडळ व सल्लागार मंडळास मान्य असतीलच असे नाही. या नियतकालिकात प्रसिध्द करण्यात आलेली लेखकाची मते ही त्याची वैयक्तिक मते आहेत. तसेच शोध निबंधाची जबाबदारी स्वत: लेखकावर राहील.

हे नियत कालिक मालक, मुद्रक, प्रकाशक विनय शंकरराव हातोले यांनी अजिंठा कॉम्प्युटर ॲण्ड प्रिंटर्स, जयसिंगपूरा, विद्यापीठ गेट, औरंगाबाद येथे मुद्रित व प्रकाशित केले.

६

महादेवी वर्मा के रेखाचित्र एवं व्यंकटेश माडगुलकर के व्यक्तिचित्र

डॉ. ललिता राठोड
बलभीम महाविद्यालय. बीड ।

साहित्य के तथाकथित विधाओं में रेखाचित्र का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। रेखाचित्र का दृष्टिकोण वस्तुपरक होता है तो व्यक्तिचित्र ललित गद्य की कोटि में आता है। व्यक्तिचित्र में लेखक का अनुभव अवतरित होता है। लेखक का दृष्टिकोण भी व्यक्तिचित्र के माध्यम से व्यक्त होता है। कई बार व्यक्तिचित्र कल्पना के आधारपर भी लिखे जा सकते हैं। इसमें कई बार निवेदक को 'मैं' का स्पर्श प्राप्त होता है। रेखाचित्र एवं व्यक्तिचित्र में 'रेखा' और 'चित्र' दोनों का समायोजन दिखाई देता है।

ज्ञानपीठ प्राप्त हिंदी की महादेवी वर्मा और डी.लीट्. उपाधि से सम्मानित मराठी के व्यंकटेश माडगुलकर अपनी–अपनी भाषा के मुर्धन्य साहित्यकार है। महादेवी वर्मा की पहचान संवेदनशील व्यक्तित्व के रुप में है तो व्यंकटेश माडगुलकर गद्यलेखर के रुप में जाने जाते है। दोनों ने अपने रेखाचित्र एवं व्यक्तिचित्र में आम आदमी में दैनिक जीवन का चित्रण किया है।

अपनी–अपनी भाषा के इन दो चित्रकारों का एक अंतःसूत्र है दर्द, पीड़ा, वेदना। इन्होंने अपने रेखाचित्र एवं व्यक्तिचित्र को संपूर्ण सत्ता बहाल की है। इसीलिए महादेवी वर्मा के रेखाचित्र और व्यंकटेश माडगुलकर के व्यक्तिचित्रों में चरित्रों के कारण ढॉचे की निर्मिति हुई है न कि ढॉचे से चरित्रों की।

दोनों लेखकों के रेखाचित्र एवं व्यक्तिचित्र के पात्रों में अधिकांश रुप में जो पीड़ा है उसके साथ जुड़ने में दोनों लेखकों में अंतर है। महादेवी अपने पात्रों की पीड़ज्ञ को महसूस नहीं करती बल्कि भोगति सी जान पड़ती है तो माडगुलकर अपने व्यक्तिचित्रों के पात्रों की पीड़ा को सहानुभूति से सहलानेवाले कलाकार लगते हैं। महादेवी अपने पात्रों का वर्णन करते समय स्वयं रोती नजर आती है तो माडगुलकर अपने व्यक्तिचित्रों के पात्रों से अपना व्यक्तित्व थोड़ा बचाकर रखते हैं। वे उनकी दास्तान सुनाते से लगते हैं। उनके आसुओं में अपना आसुँओं में अपना आसूँ नहीं बहाते बल्कि अपने हाथों से उनके ऑसू पोछकर सहानुभूति से उनको दर्शाते हैं। अन्यत्र अस्पष्टता कितनी भी क्यों न हो लेकिन हिंदी में रेखाचित्र को विधा के रुप में स्पष्ट मान्यता प्राप्त होने की दृष्टि से महादेवी वर्मा का योगदान महत्वपूर्ण है। उसी प्रकार व्यंकटेश माडगुलकर ने व्यक्तिचित्र को एक नया आयाम दिया।

हिंदी साहित्य के इतिहास में एक मिल का पत्थर एवं रेखाचित्र परम्परा का एक आदरयुक्त व्यक्तित्व महादेवी वर्मा है। उन्होंने अपने रेखाचित्रों में ऐसे व्यक्तियों को प्रस्तुत किया है जो आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से अत्यंत साधारण स्तर के है। ऐसे व्यक्ति विभिन्न प्रकार से उनके संपर्क में आये हैं। साधारण आदमी की दृष्टि से ये मिट्टी के ढेले है किन्तु महादेवी की पारखी दृष्टि ने उनके भीतर मानवता का कांचन देखा है। महादेवी के रेखाचित्र बाहरी ब्यौरे के सूक्ष्म अंकन के साथ ही करुणा और सहानुभूति की स्निग्धता से ओतप्रोत है।